उधार

धंसू अपने घर के छप्पर के नीचे बैठे बैठे कुछ बड़बड़ाए जा रहा था।

'इसी बीच एक आवाज गूंजती है'

ए ,जी तुम अकेले बैठे बैठे क्या बड़बड़ा रहे हो ?

कुछ नहीं

कुछ तो

आज ऐसा क्या हो गया जिसके कारण तुम पीले पत्ते की तरह कांप रहे हो?

तुम जाओ अपना काम करो।

हां हां मैं तो चली जाऊंगी,

'लेकिन'

लेकिन क्या?

तुम्हें तो कुछ भी याद नहीं रहता।

क्या याद नहीं रहता, कौन सा पहाड़ टूट पड़ा।

कल बाबू जी आ रहे हैं।

तो क्या?

कुछ न कुछ पैसों की व्यवस्था तो करनी ही पड़ेगी।

हां

कुछ व्यवस्था करता हूं।

'इतना कहकर धंसू चल पड़ता है'

कहां जा रहे हो?

पैसों की व्यवस्था करने।

ठीक है जल्दी आ जाना।

'धंसू साहूकार के पास पहुंचता है'

राम राम धनीराम साहब ।

आओ

कैसे हाल-चाल हैं।

आपकी कृपा से सब ठीक-ठाक है। सुबह आपकी बहू के बाबू जी

आ रहे हैं।

यह तो अच्छी बात है। तुम क्यों छुईमुई हुए जा रहे हो?

आप तो जानते हैं कि खेती की दशा क्या है?

"धनीराम तिरोड़ी खुलता है कुछ पैसे निकाल कर देता है"

हम आपके पिछले पैसे भी नहीं लौटा पाए यह पैसे किस मुंह से ले।

'कुछ समय बाद धनीराम धंसू के घर आता है'धंसू चारपाई बिछाकर धनीराम को बैठता है।

अब तो सब कुछ ठीक-ठाक है।'धनीराम ने पूछा'

हां हां आपकी कृपा से सब अच्छा है।

हमें हमारे पैसे लौटा दो मुझे जरूरत है। ' धनीराम ने कहा'

हां मालिक बहुत जल्दी फसल आते ही आपके पैसे लौटा दूंगा।

फसल!

हां हां मालिक फसल आते ही आपको पैसे लौटा दूंगा।

किस फसल की बात कर रहे हो?

'अच्छा मजाक कर लेते हैं आप। धंसू ने धनीराम से कहा'

मैं मजाक नहीं कर रहा हूं। मैं सही पूछ रहा हूं।

बेटी की शादी में और बेटे की कोचिंग के लिए जो पैसे लिए थे, उसके स्थान पर तुमने अपना खेत मेरे नाम कर दिया था।

तुम भूल गए तुमने छोटे और बंटू के सामने स्टांप पर अंगूठा लगाकर मुझे खेत लिख दिया था।

'धंसू को क्रोध आ गया'

आप झूठ पर झूठ बोल रहे हो।

अच्छा मैं झूठ बोल रहा हूं ।पैसे

दूं और झूठा भी बनूं। अभी हो जाएगा दूध का दूध और पानी का पानी, मैं अभी छोटे और बंटू को बुलाता हूं।
हां हां बुला लीजिए।

'धंसू आग बबूला हो उठा'
तुम्हारा हर बेगार करते रहे उसका कुछ एहसान नहीं। और खेत अपना बताने लगे।
'धनीराम चिल्लाकर बोला'
यदि मेरे पैसे दो तीन दिन में नहीं दिए तो तुम्हें घर मेरे नाम घर लिखना ही पड़ेगा।
'इतना कहकर धनीराम चल पड़ता है'
धंसू यह बात सुनकर अपना आपा खो बैठता है और सूखी लकड़ी उठाकर धनीराम पर झपट पड़ता।

साहित्य रत्न जुलाई2023

भास्कर सिंह माणिक